AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

फैशन के क्षेत्र में लोक अभिकल्पन द्वारा दृश्यकला की भुमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
नवीन कुमार विश्वकर्मा,
शोधार्थी (ललित कला विभाग)
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

मानव जीवन में फैशन एक ऐसा बदलाव है जो हमेशा हमें एक नएपन का एहसास दिलाता रहता है। यह हर दौर में अपने साथ एक समय का चलन लेकर चलता रहता है जिसे फैशन कहते हैं। जैसा कि फैशन मानव द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ पात्र, वस्त्र एवं आभूषण आदि के आकार तथा लोक दृश्यकला, साज–सज्जा में भी परिलक्षित दृश्य फैशन होता है। कपड़े, घर स्टाइल, मेकअप आदि यह सब पुराने नहीं होते बल्कि समय के बदलाव के साथ–साथ इसमें भी कुछ अब नए लोक दृश्यकला के प्रयोगो का निर्माण किये जाते रहते हैं।

मुख्य शब्द

दृश्यकला, लोककला, फैशन के क्षेत्र, 'अभिकल्पना' (डिजाइन), रचनात्मक, कलात्मक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक।

आज की दौर में कलात्मक दृश्यकला के द्वारा अभिकल्पन की दुनिया में फैशन बहुत ही तेजी से अपना रुप बदल रहा है। अभिकल्पना किसी पूर्वनिश्चित ध्येय की उपलब्धि के लिए तत्संबंधी विचारों एवं अन्य सभी सहायक वस्तुओं को क्रमबद्ध रूप से सुव्यवस्थित कर देना ही 'अभिकल्पना' (डिजाइन) है। फैशन के निर्माण की योजना बनाते हुए रेखाओं का विभिन्न रूपों में अंकन किसी एक लक्ष्य की पूर्ति को सोचकर करता है। कलाकार भी रेखाओं के संयोजन से चित्र में एक विशेष प्रभाव या विचार उपस्थित करने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार अभिकल्पनकर्ता किसी वस्तु उत्पाद चीजों में सुनिश्चित टिकाऊपन और दृढ़ता लाने के लिए उसकी विविध मापों को नियत करता है। सभी

फैशन की बातें अभिकल्पना के अंतर्गत हैं इसलिए फैशन की दुनिया में बने रहना है तो हमेशा सजग रहना होगा। अपने आप को बदलने के लिए भी हमेशा तैयार रहना होगा, क्योंकि अगर आप अपने फैशन को लेकर सजग नहीं रहेंगे, आने वाले फैशन की नए चीजों के बारे में जल्दी नहीं जान पाएँगे तो आप फैशन की आधुनिक दुनिया से बाहर

हो जाएँगे। इसलिए दृश्यकला द्वारा अभिकल्पन के क्षेत्र में होने वाले तकनीकी बदलाव को भी अच्छी तरह जाने और समझे। फैशन की इस दुनिया में आज जो छाया हुआ है, जरूरी नहीं वह कल भी टिका रहे क्योंकि फैशन के दौर में इस बाजार में धीरे–धीरे बदलाव नहीं आता, वह तो अचानक आता है और एकाएक गायब हो जाता है। उदाहरण के लिए हो सकता है कि आज कॉटन पर दृश्यकला के द्वारा अभिकल्पना किया है, कुछ ही समय में लेदर पर दृश्यकला के द्वारा अभिकल्पना की माँग शुरू हो जाए। इसलिए हर समय अपने आप को प्रकृति के बदलते रूप को देखते हुए हमेशा अपडेट रखने की कोशिश होनी चाहिए।

आज की दौर में कलात्मक लोक दृश्यकला के द्वारा अभिकल्पन की रचनात्मक दुनिया में फैशन बहुत ही तेजी से अपना रुप बदल रहा है। लोक दृश्यकला आदिम युग से जिस धरातल पर अपना स्वरूप प्राप्त करती रही है, उसी रूप में आज भी इनको भूमि और भित्ति पर देखा जाता है, जो समय के साथ धीरे–धीरे कागज और कपड़े पर भी देखी जा रही है। लोककला मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो मानव जीवन के साथ जन्म से लेकर मृत्यु तक विद्यमान रहती है। इसी कारण लोककला और लोकमानव में एक स्वाभाविक अपनत्व होता है।

फैशन में लोककला का गहन अध्ययन करने हेतु इसे विभिन्न भागों में वर्गीकृत किया गया है:

1. फैशन के क्षेत्र में धार्मिक भावना पर आधारित।
2. फैशन के क्षेत्र में सामाजिक भावना पर आधारित।
3. फैशन के क्षेत्र में मनोरंजक भावना पर आधारित।
4. फैशन के क्षेत्र में व्यवसायिक भावना पर आधारित।

फैशन के क्षेत्र में लोककला का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योकि लोककला का जन्म और विकास कहीं न कहीं धर्म के कारण ही हुआ, इसलिए फैशन के क्षेत्र में लोककलाएँ धार्मिक भावना से ओत–प्रोत होती है। फैशन के क्षेत्र में लोककला मानव समाज को लोक कल्याण के लिये प्रेरित करती है। यह समाज को विछिन्न होने से बचाती है और सामाजिक आदर्शों को मज़बूत बनाती हैं। लोककलाएँ समाज में होने वाले उत्सव व कार्यक्रमों में व्यक्तित्व को लोक शैली में सजाने संवारने में सहायक होती है। फैशन के क्षेत्र में लोककलाएं मानव जीवन में मन की खुशी को व्यक्त करने में भी परिलक्षित होती है जैसे – फैशन के क्षेत्र में मेहंदी या टैटू लगाना, घर की वस्तुओं को अलंकृत करना फैशन के क्षेत्र में कपड़े पर गुड्डे–गुड़िया का चित्र बनाना, फैशन के क्षेत्र में बच्चों के कपड़े, तकिया, चादर आदि पर बारीक कलात्मक कसीदाकारी करना फैशन के क्षेत्र में, लोककला से अलंकृत करना आदि सभी दैनिक जीवन के छोटे–छोटे कार्यों में आन्तरिक सौन्दर्य प्रकट होता है।

फैशन के क्षेत्र में लोककला दैनिक उपयोग में आने वाली सभी वस्तुओं जैसे बर्तन, कपड़े, आभूषण आदि के आकार के गठन में भी परिलक्षित होती है जिनके निर्माण का कार्य लोक कलाकारों द्वारा फैशन के क्षेत्र में किया जाता है। इनके द्वारा निर्मित की गयी वस्तुओं पर क्षेत्रीय प्रभाव होता है तथा इनकी कारीगरी परम्परागत रूप से

पूर्वजों से संस्कार रूप में प्राप्त होती है। फैशन के क्षेत्र में देश के संस्कृति का लोककला के सभी रूप विद्यमान हैं। जिसमें देश के चार भागों में व्याप्त परम्परागत लोक चित्रकला को फैशन के क्षेत्र में प्रदर्शित करते हुए देश की संस्कृति को दिखाने का प्रयास किया जाता है। प्राचीन काल से ही देश की कला और संस्कृति के विकास का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह धरती सदैव से ही हरी–भरी और शान्तिमय मैदान के रूप में पहचानी गयी है। यहाँ सदियों से भारतीय संस्कृति, धर्म ज्ञान, विज्ञान, कलात्मक और सामाजिक गतिविधियां फलती–फूलती चली आ रही हैं। ये वह पावन भूमि है, जहाँ पर गंगा और जमुना का संगम हुआ है। गंगा अपने पावन जल में जमुना की नीलिमा को समेटे निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। वास्तव में यदि देखा जाये तो भारत देश एक ऐसा केन्द्र स्थल है, जहाँ पर फैशन के क्षेत्र में सम्पूर्ण कला का मिला जुला स्वरूप देखने को मिलता है। यह देश वह दर्पण है, जिसमें फैशन के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं।

फैशन के क्षेत्र में लोककला मानव जीवन के हर एक पहलू में किसी न किसी रूप में परिलक्षित होती है, चाहे वो मनुष्य जीवन में होने वाले शुभ अवसरों और तीज त्यौहारों के अवसर पर पहने जाने पोशाक हो या दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ हों। सभी फैशन के क्षेत्र में लोक मानव के आन्तरिक सौन्दर्य भावों के दर्शन प्राप्त होते हैं। जहाँ एक ओर दैनिक तथा विशेष अवसरों पर प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं पर किया जाने वाला अलंकरण लोकमानव के मन की प्रसन्नता को प्रकट करते हैं, वहीं दूसरी ओर लोकमानव द्वारा पहनने या ओढ़ने–बिछाने हेतु बनाये जाने वाले वस्त्रों पर किया जाने वाला अलंकरण भी फैशन के क्षेत्र में लोक मानव की प्रफुल्लता के उदाहरण हैं। खाली समय में गृह उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना और उसे भिन्न–भिन्न प्रकार के अलंकरण से सुसज्जित करके आकर्षक रूप प्रदान करना भी फैशन के क्षेत्र में लोककला का ही अभिन्न अंग है।

लोककलाओं से जहाँ एक ओर समाज के सांस्कृतिक रीति रिवाजों पर प्रकाश पड़ता है वहीं दूसरी ओर फैशन के क्षेत्र की सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रकाश पड़ता है। फैशन के क्षेत्र में लोककला सांस्कृतिक दृष्टि से जितनी महत्वपूर्ण हैं, उतनी ही आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रही है। जहाँ एक ओर फैशन के क्षेत्र में लोककला सांस्कृतिक रूप से लोक मानव को आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं वहीं दूसरी ओर लोक मानव को फैशन के द्वारा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु भी प्रेरित करती है। इसीलिए लोककलायें सांस्कृतिक दृष्टि के साथ–साथ आर्थिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। फैशन के क्षेत्र में व्यवसायिक रूप से समृद्ध हो रहा हैं जिनमें समय के अनुसार किये जाने वाले परिवर्तनों को भी प्रस्तुत करने का प्रयास फैशन के क्षेत्र में किया जा रहा है। फैशन के विभिन्न व्यवसायों में व्याप्त देश की लोककलाएँ हैं – वस्त्र, पात्र, मूर्ति, चूड़ियाँ, बर्तन, इत्यादि शुभ अवसरों पर प्रयुक्त होने वाली वस्तुएँ, गृह उपयोगी वस्तुयें, सांझी एवं विभिन्न लोक चित्रकला जो फैशन के क्षेत्र में व्यावसायिकता की ओर उन्मुख हैं, जिनका निर्माण फैशन के क्षेत्र में लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है, जो सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है। लोकमानव द्वारा फैशन के क्षेत्र में निर्मित की जाने वाली बहुत सी ऐसी वस्तुएँ एवं कलाएँ हैं जिनका प्रयोग व्यक्तिगत रूप से किया जाता था जिनके आकर्षण ने विशिष्ट घरानों और धनवान परिवारों को प्रभावित किया। फलस्वरूप इन फैशन कलाओं का व्यवसायीकरण होने लगा। व्यवसायीकरण से ये कलाएँ विस्तार पाने लगीं और कलाकारों को आर्थिक रूप से

समृद्ध करने लगी। वर्तमान मे लोककलाओं के माध्यम से समृद्ध लोककलाओं को देखकर बहुत से लोग अपनी पारम्परिक कलाओं को फैशन के क्षेत्र में व्यवसायिक रूप देने का प्रयास कर रहे हैं।

व्यवसायिक रूप से फलने–फूलने वाली लोककलाओं में समय के अनुसार विभिन्न प्रकार के फैशन के क्षेत्र में परिवर्तन किये जा रहे हैं, वह समय की मांग के अनुसार अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये बहुत ही आवश्यक है जिसके लिये लोक कलाकार सदैव तत्पर रहते है। फैशन के क्षेत्र में देश की लोककलाओं की मांग देश तक ही सीमित नहीं है बल्कि इनकी मांग देश के साथ–साथ पूरे विश्व में भी की जाने लगी है, जिससे फैशन के क्षेत्र में ये कलाएं अपने कलाकारों के साथ–साथ प्रदेश और देश को भी आर्थिक रूप से समृद्ध करने में अहम भूमिका निभा रहा हैं। फैशन के क्षेत्र में लोककलायें पूर्ण रूप से प्रकृति की हितैषी होती हैं तथा इसमें विद्युत का प्रयोग न के बराबर है। इस कारण ये कलाएँ किसी सुविधा की मोहताज नहीं होती। प्राकृतिक वातावरण में फलती–फूलती इन कलाओं के प्रति लोगों की जागरुकता तेज़ी से बढ़ रही है। फलस्वरूप फैशन के क्षेत्र में ये लोककलाएँ देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है ।

फैशन के क्षेत्र में जोखिम लेने से पीछे ना रहे

फैशन के बाजार में आप कितनी कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं यह आपके कलात्मक अभिकल्पन पर निर्भर करता है। किसी भी चीज को बदलने से पहले आपके इरादे मजबूत होने चाहिए। फैशन की दुनिया में आगे आ रहे आज की युवा डिजाइनरों को पहले वस्तु पर लोक दृश्यकला द्वारा अभिकल्पन के लिए बहुत ही मेहनत और लग्न की जरूरत होती है। कभी हिम्मत नहीं हारना चाहिए क्योंकि पहली बार में मुश्किल लग सकता है। कभी–कभी अपनी सीमा से आगे बढ़कर कुछ काम करना चाहिए, अपने आत्मविश्वास को भी मजबूत रखना चाहिए।

नई लोक दृश्यकला के द्वारा अभिकल्पन की चीजों की खोज

हर कलाकार के लिए यह जरूरी है कि फैशन की दुनिया में चल रहे बदलाव, उसकी कलात्मक अभिकल्पन, अर्थव्यवस्था तथा राजनैतिक परिदृश्य से अच्छी तरह वाकिफ रहे। अगर आप सोचते हैं कि एक कलाकार इस फैशन की दुनिया में सिमटकर सफल हो सकता है तो आप गलत सोचते हैं क्योंकि हर अभिकल्पनकर्ता को हर दिन अपनी जानकारी को अपडेट करते रहना चाहिए। उन्हें हर रोज अखबार, मैग्जीन पढ़ना चाहिए तथा टेलीविजन से भी जानकारी लेनी चाहिए।

मजबूत आत्मविश्वास

सभी अभिकल्पनकर्ता कलाकारों को अपने काम तथा बदलते स्वरूप को लेकर अपने कलात्मक विचार और आत्मविश्वास को हमेशा मजबूत रखना चाहिए। एक युवा लोक डिजाइनर को हमेशा लोक कला को उभार कर फैशन के दुनिया में सामने दिखाने का साहस रखना चाहिए, जो किसी स्कूल में नहीं सिखाया जा सकता है। आत्मविश्वास जैसी चीज अपने अंदर खुद बनानी पड़ती है।

फैशन के काम में रुचि होना किसी भी काम को करने के लिए व्यक्ति की उसमें रुचि होना बहुत ही जरूरी है। आपको अपने लोककला के काम में कुछ तो नया और दूसरों से अलग करना चाहिए। आपका वस्तु उत्पाद भी नया, दूसरों से अलग तथा आकर्षक होना चाहिए, जिससे लोगों का ध्यान आपके वस्तु उत्पाद की तरफ आकर्षित हो सके। अपने काम की गुणवत्ता को पूरे दिल से तैयार करें, काम के साथ बिल्कुल भी समझौता नहीं करना चाहिए। एक कलाकार को अपने काम को पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए। फैशन जैसी चीज को स्कूल से पढ़ाई कर लेने का यह मतलब नहीं है कि आप सब कुछ सीख गए क्योंकि फैशन की दुनिया में कोई भी वस्तु उत्पाद चीज स्थिर नहीं है यहां तो हर दिन कुछ नया वस्तु उत्पाद देखने को मिलता है।

फैशन के क्षेत्र में सही सामग्री वस्तु उत्पाद का चुनाव

फैशन से संबंधित जरूरी चीजों को ही जानना काफी नहीं है बल्कि एक डिजाइनर को यह भी पता होना चाहिए कि उस वस्तु उत्पाद बनाने का तरीका क्या है, यह वस्तु उत्पाद बनता कैसे हैं। उनको यह भी पता होना चाहिए कि किस तरह का वस्तु उत्पाद अपने काम में प्रयोग करना है। डिजाइनर को अपने काम को पूरा करने के लिए सही वस्तु उत्पाद सामग्री को पहचानने में कभी गलती नहीं करनी चाहिए। उसे काम को प्रारंभ करने से पहले पर्याप्त वस्तु उत्पाद सामग्री जांच लेनी चाहिए।

समय के साथ फैशन में बदलाव

मौसम के साथ–साथ हमारा फैशन भी बदलता रहता है जैसा कि गर्मियों में कपड़ों की गुणवत्ता के साथ–साथ हम कपड़े के रंग पर भी ध्यान देते हैं कि हमें गर्मी के मौसम में किस रंग के कपड़ों का ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। फैशन के क्षेत्र में खादी से बने वस्त्रों के वस्तु उत्पाद को पहनने से गर्मी के मौसम में काफी आरामदायक महसूस होता है। यह पसीने को भी सोख लेता है इसलिए खादी वस्त्र गर्मी के मौसम के लिए अच्छा वस्तु उत्पाद माना जाता है। कॉटन, शिफॉन के वस्त्र फॉर्मल लुक के लिए पहने जाते हैं जो अच्छे भी लगते हैं। गर्मी के मौसम में फैशन हमेशा कूल होना चाहिए। फैशन की इस दुनिया में बहुत सारी वस्तु उत्पादों का समावेश होता है जैसा कि कला, पोशाक, भोजन, लोगों के रहने का तरीका, साहित्य और फैशन का रुझान। सोशल मीडिया फैशन के वस्तु उत्पाद को बढ़ावा देने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फैशन के वस्तु उत्पाद हमारे पसंद नापसंद को भी काफी निर्णय करता है।

निष्कर्ष

फैशन के क्षेत्र में वस्तु उत्पाद में लोक दृश्यकला बहुत ही अल्पकालिक और गतिशील होता है। वर्ष के दौरान मौसम परिवर्तन होने पर फैशन भी बदलते रहते हैं। इसलिए अगर फैशन की इस दुनिया में बने रहना है तो पूरी सजगता के साथ दुनिया के दस्तूर को समझना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता, डॉ मीनाक्षी, *भारतीय वस्त्रकला।*
2. मिश्रा, ममता, *प्राचीन भारत में वस्त्रकला।*
3. माथुर, कमलेश, *हस्तशिल्प कला के विविध आयम*।
4. शर्मा, वन्दना, कानपुर, अंक–1, 04 दिसम्बर – 05 दिसम्बर 2008, लोककला आधुनिक कला पर उसका प्रभाव, पृष्ठ सं. 44–45।
5. नई दिल्ली, अंक 4, वर्ष–51, जुलाई 2007, *योजना पत्रिका,* पृष्ठ सं0 14–16।
6. उपाध्याय, कृष्ण देव, इलाहाबाद– 1970, *लोक साहित्य की भूमिका,* पृष्ठ संख्या 100–101।

––==00==––